Topic-5 - लाइबनित्ज:- चिदणु, ईश्वर
लाइबनित्ज
Topic 16 - जेम्स - आमूल अनुभववाद

चिदणु, ईश्वर

आधुनिक पाश्चात्य दर्शन में ईश्वर की सत्ता सिद्धि के क्रम में लाइबनित्ज का चिदणुवाद महत्वपूर्ण है। जिस सत्ता को अन्य दर्शनों में द्रव्य कहा गया है लाइबनित्ज उसे चिदणु कहता है। लाइबनित्ज अपने चिदणुवाद में दो मान्यताओं कार्टेशियन दर्शन एवम परमाणुवादी विचार का समन्वय करता है। लाइबनित्ज से पूर्व डेकार्ट स्वतंत्र अस्तित्व को द्रव्य का अनिवार्य लक्षण मानते हुए द्रव्य को दो रूपों में विभाजित करता है-
निरपेक्ष द्रव्य (ईश्वर)
सापेक्ष द्रव्य (चित एवं अचित)

स्पिनोजा के अनुसार यदि स्वतंत्र अस्तित्व को द्रव्य का अनिवार्य लक्षण माना जाए तो ऐसा द्रव्य दो नहीं हो सकता!। अतः चित एवं अचित ईश्वर के गुण हैं। जबकि लाइबनित्ज के अनुसार यदि चित एवं अचित को ईश्वर का गुण माना जाए तो ईश्वर का संकल्प स्वातंत्र्य बाधित हो जाता है। लाइबनित्ज के अनुसार स्वतंत्रता द्रव्य का अनिवार्य लक्षण है परन्तु स्वतंत्रता का तात्पर्य स्वतंत्र अस्तित्व नहीं बल्कि स्वतंत्र क्रियाशक्ति है। लाइबनित्ज के अनुसार द्रव्य वह है जिसमें स्वतंत्र रूप से कार्य करने की सामर्थ्य हो।

चिदणु के स्वरूप के सन्दर्भ में लाइबनित्ज अपने दर्शन में भौतिकी के परमाणु की वास्तविकता तथा गणित के बिन्दु की अभौतिकता इन दोनों का समन्वय कर एक अभौतिक बिन्दु की कल्पना करते हैं इसे ही वह अपने दर्शन में चिदणु की संज्ञा देता है

लाइबनित्ज के अनुसार प्रत्येक चिदणु एक पृथक व्यक्तित्व होता है क्योंकि वह अपने आप में पूर्ण होता है अतः किसी चिदणु को अन्य चिदणु से आदान प्रदान की कोई आवश्यकता नहीं होती अर्थात प्रत्येक चिदणु गवाक्षहीन होता है। यही नहीं प्रत्येक चिदणु शक्ति संपन्न होता है इसीलिए चिदणु को लाइबनित्ज 'शक्तिमान विशेष' कहता है।

चिदणु की दो अन्य विशिष्टताएँ प्रयास एवं प्रवृत्ति है। प्रयास का अर्थ है आन्तरिक परिवर्तन। प्रत्येक चिदणु में आन्तरिक परिवर्तन होता है जिसके फलस्वरूप वह चिदणु परम चेतना को प्राप्त करना चाहता है। इसीलिए लाइबनित्ज कहता है - 'प्रत्येक चिदणु विश्व का दर्पण' है। क्योंकि सम्पूर्ण विश्व चेतना का रूप है और चिदणु भी चेतना का रूप है। अतः प्रत्येक चिदणु में समस्त विश्व प्रतिबिम्बित होता है। लाइबनित्ज के अनुसार जैसे जैसे चिदणु विकास की ओर बढ़ता है वह और भी चेतना एवं आनन्द ग्रहण करता है इसे ही चिदणु का लाइबनित्ज प्रयास कहता है। परन्तु विकास दिशा की ओर गति ईश्वर होती है इसे चिदणु का लाइबनित्ज ज्ञान प्रयास कहता है। जब चिदणु में आन्तरिक परिवर्तन होता है तो उनकी अवस्थाएँ भी बदलती हैं इसे ही लाइबनित्ज अपने दर्शन में प्रवृत्ति कहता है।

→ परम चेतन या पूर्ण चेतन चिदणु में चेतना पूर्णरूप से विकसित हो जाती है लाइबनित्ज इसे ही ईश्वर कहते हैं यह चेतना का उच्चतम स्तर है। इसीलिए ईश्वर को चिदणुओं का चिदणु कहा गया है।

लाइबनित्ज के अनुसार यद्यपि असंख्य चिदणु हैं और चिदणुओं की असंख्य अवस्थाएँ भी हैं लेकिन चिदणुओं के बीच चार नियम हैं

i- स्वातंत्र्य का नियम — चिदणुओं के मध्य कोई खिड़की नहीं

ii- सादृश्यता का नियम — गुणात्मक अद्वैत

iii- वैसादृश्य का नियम — पूर्वस्थापित सामंजस्य

iv- शक्ति संरक्षण का नियम — चिदणुओं की शक्ति का योग सदैव स्थिर रहता है

आलोचना—

i- यदि ईश्वर स्वयं चिदणु है तो वह अन्य चिदणुओं में सामंजस्य कैसे उत्पन्न कर सकता है

ii- उद्देश्य की एकता कम एवं अधिक विकसित चिदणुओं में एक समान कैसे हो सकती है

iii- एक जड़ चिदणु सक्रिय चिदणुओं पर कैसे शासन कर सकता है

iv- यदि ईश्वर पहले से ही चिदणुओं में सामंजस्य उत्पन्न कर दिया है अतः यहाँ चिदणुओं स्वातंत्र्य खंडित हो जाता है

v- आप को सामंजस्यपूर्ण मानना होगा ही है, जैसे हमारे चेहरे पर नाक जिस पर हम चश्मा पहन सकें — वाल्टेयर - कैन्डीड उपन्यास में।

बुद्धिवादियों का महत्वपूर्ण सिद्धान्त है "जन्मजात प्रत्ययों का सिद्धान्त" अर्थात सम्पूर्ण ज्ञान जन्म के पहले से ही हमारी आत्मा में विद्यमान रहता है। इसका स्पष्ट उल्लेख प्लेटो की पुस्तक मीनो संवाद में मिलता है।

आधुनिक दर्शन में जहां डेकार्ट एवं स्पिनोजा जहां कुछ ही ज्ञान को जन्मजात कहते हैं वहीं लाइबनित्ज यह कहकर कि "हमारी बुद्धि में बुद्धि को छोड़कर लेशा कुछ भी नहीं है जो पहले हमारी इन्द्रियों में न हो" बुद्धिवाद को पराकाष्ठा पर पहुंचा देता है।